मिली हुई मिट्टी के एक समान चार भाग करें। दो भाग रखें दो भाग छोड़ दें इस प्रक्रिया को दुहराते रहें जब तक 1-1.5 किग्रा मिट्टी शेष न बचे।

बची हुई 1-1.5 किग्रा मिट्टी को पोलथीन या कपड़े की थैली में रेखें।

सूचना पत्र

नाम ....

पता..

खेत की पहचान..........................

विगत फसल का नाम....................

आगामी फसल का नाम..................

दिनॉक......................................

आवश्यक तथ्यों से सूचना पत्र दो प्रतियां भर के मिट्टी जॉच परीक्षण केन्द्र में भेजें।

सावधानियॉं:-

1. जिस खेत की मिट्टी जांच करवानी है वहाँ का प्रतिनिधि होना चाहिए।
2. मेड़ के किनारे से मिट्टी नहीं लेना चाहिए।
3. जिस खेत में गोबर खाद या किसी प्रकार की खाद मौजुद हो तो नहीं लेना चाहिए।
4. बड़ी पेड़ के नीचे से मिट्टी नहीं लेना चाहिए।
5. संग्रहित मिट्टी को छांव में सुखाना है।

के.वी.के.-नारायणपुर/आई.जी.के.वी./2014-15/लीफलेट-3

मिट्टी परीक्षणों का महत्व एवं विधियां

डी.दास
एम. के. साहू
आर. आर. कोर्राम
एम. के . वर्मा
आर. के. मोदी

कृषि विज्ञान केन्द्र, नारायणपुर
इं.गा.कृषि विश्वविद्यालय,रायपुर
नारायणपुर(छ.ग.) 494661

मिट्टी परीक्षण क्यों और कैसे?

किसान भाइयों, आपको अपनी भूमि (मिट्टी) को जानना उतना ही आवश्यक है जितना कि अपने बच्चों या पशु के स्वास्थ्य के बारे में जानना।

क्या आप जानते हैं कि आप पोषक तत्व भूमि में फसल की आवश्यकतानुसार डाल रहे हैं? किसी खेत की मिट्टी क उपजाऊ शक्ति का उसकी उपज से सीधा संबंध है। अक्सर यह देखा गया है कि जब किसी फसल की निश्चित प्रजाति को अलग–अलग खेतों में उगाते हैं तो उसकी उपज में अन्तर पाया जाता है। ऐसा इसलिए है कि सभी मिट्टीयों के भौतिक गुण तथा आवश्यक पोषक तत्व को प्रदान करने की क्षमता समान नहीं होती है। इसी प्रकार भिन्न खेतों में अगर बराबर उर्वरक डाला जाए तो भी उपज में अन्तर पाया जाता है। इसलिए मिट्टी परीक्षण के आधार पर खादों के संतुलित उपयोग की आवश्यकता है अन्यथा मिट्टी और पौधों में पोषक तत्वों के असंतुलन की आंशका बढ़ जाती है जिसका पैदावार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है यही कारण है कि खाद (उर्वरक) का प्रयोग मिट्टी परीक्षण के आधार पर ही करना चाहिए।

विभिन्न फसलों द्वारा अवशोषित पोषक तत्वों की मात्रा भिन्न होती है। इनमें से कुछ पोषक तत्व जैसे नत्रजन, स्फुर व पोटाश की आवश्यकता अधिक होती है। कुछ पोषक तत्व जैसे कैल्शियम, मैग्नीशियम एवं सल्फर फसलों के पोषक के अतिरिक्त मृदा सुधार का कार्य करते है। हमारे क्षेत्र की ऊँची जमीनों जैसे भाटा आदि में प्रायः अन्य तत्वों की कमी पायी गयी है। जिसमें इन भूमियों का स्वभाव अम्लीय हो गया ह। जिसके सुधार के लिए चुने की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त मृदा में कार्बनिक पदार्थ की मात्रा का ज्ञान भी आवश्यक है।

मिट्टी नमूना किस समय लें-

खेत में मिट्टी का नमूना वर्ष में फसल कटने के बाद कभी भी लेसकते हैं। पतझड़ ऋतु मिट्टी का नमूना लेने के लिए उपयुक्त समय है। खेत गीला नहीं होना चाहिए।

आवश्यकता-

1. खुरपी या फावडा।
2. पोलीथीन या कपड़े की थैली।
3. सूखी बोरी या तसला।
4. सूचना पत्र लिखने के लिए कागज कलम ।

मिट्टी का प्रतिनिधि नमूना लेने की विधि

खेत की मिट्टी की बनावट और उत्पादकता के आधार पर बाँट कर 8-10 स्थानों पर चिन्ह लगायें।

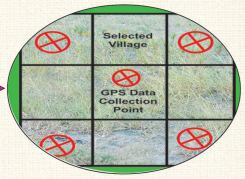

चिन्हत जगह पर साफ करके आकार का 9 इंच गहरा गड्ढा खोदें (खाद एवं फसलों के अवशेषों को अलग करना आवश्यक है।)

खुरपी या फावड़े की मद्द से गड्ढे के एक ओर से नीचे पूरी गहराई तक 1 इंच मोटी मिट्टी के परत निकाले लें।

मिट्टी को साफ और सूखी बोरी या तसला में रखें एवं अच्छी तरह से मिला कर मोटी तह में फैला दें।